*DR Krishnadeo kumar bharti*
*Assistant professor (G.T)*
*Dept of Political science*
*C.M.j College Donwarihat*
*Khutauna, Madhubani*
*Email-Kdkbharti08@gmail.com*
*B.A, Part--3 Paper-7 Date-30-07-2020*
*Mo.No--9234999361.*

स्टुअर्ट मिल के उपयोगितवादी सिद्धन्तों का विवेचना करें।*(Examine the theory of utilitarianism as expounded by j.S.Mill.)*

जे.एस.मिल के उपयोगितावादी विचारों का वर्णन उसके लिखित यूटिलिटेरियनिज्म मे मिलता है।इस ग्रंथ में उन्होंने अपने उपयोगितावादी विचारों का विषद वर्णन किया है।प्रारम्भ में मिल बेन्थम के सिद्धन्त को स्वीकार किया।उपयोगितावाद की परिभाषा प्रस्तुत करते हुए उसने लिखा है कि," यह मत जो उपयोगितावाद अथवा अधिकतम सुख के सिद्धन्त को नैतिकता का आधार समझता है यह मानता है कि प्रत्येक कार्य उसी अनुपात में सही है, जिस अनुपात में वह सुख की बृद्धि करता है और जो भी कार्य सुख से विपरीत दिशा में जाता है वह गलत है।सुख का अर्थ है आनन्द तथा दुख का अभाव दुख का अर्थ है पीड़ा तथा आनन्द का अभाव।"मिल ने बेन्थम के उपयोगितावादी सिद्धन्त में संशोधन किया है।मिल के संशोधन के कारण उपयोगितावादी सिद्धन्त ने एक अव्यावहारिक रूप ले लिया है।मिल के उपयोगितावादी सिद्धन्त के सम्बन्ध मे निम्न बातें स्मरणीय है---

*1.* सुखों में मात्रा व गुणों का अन्तर-----मिल के अनुसार सुखों में मात्रा या गुणों का अन्तर होता है।एक सुख में दूसरे सुख की अपेक्षा मात्रा व गुण में अवश्य ही अन्तर होगा। उसने लिखा है," एक संतुष्ट होने की अपेक्षा एक असंतुष्ट मनुष्य होना अधिक अच्छा है।एक संतुष्ट सूअर होने की अपेक्षा एक असंतुष्ट मनुष्य होना अधिक अच्छा है।एक संतुष्ट मूर्ख और सूअर का मत एक दूसरे से भिन्न है तो इसका एक मात्र कारण यही है कि वे दोनो केवल अपनी बातों को जानते हैं।मिल ने अपने इन विचारों को दूसरे शब्दों में व्यक्त करते हुए कहा है कि," कुछ प्रकार के सुख अन्य प्रकार के कुछ सुखों की अपेक्षा अधिक आवश्यक और अधिक महत्व के है।"

*2.*व्यक्तिगत स्वार्थ तथा सार्वजनिक सुख का अन्तर -----मिल ने अपने उपयोगितावाद में व्यक्तिगत स्वार्थ और सार्वजनिक सुख के भेद का प्रकट करने का प्रयास किया है।उसने कहा है"व्यक्ति का अधिक सुख उपयोगिता का मापदण्ड नहीं है बल्कि समिष्ट रूप से अधिकतम सुख ही उसका मापदण्ड है।"उपयोगितावाद के अनुसार व्यक्ति को अपने और पराये सुख के बीच इतना पक्षपातहीन होना चाहिए जितना एक निरपेक्ष और उदार दर्शक होता है।

*3.*सच्चे सुख की प्राप्ति-------मिल का उपयोगितावाद सच्चे सुख की प्राप्ति के सिद्धन्त को मानता है कि उसके अनुसार कुछ सुख अच्छे होते हैं और कुछ खराब।व्यक्ति को सदैव अच्छे प्रकार के सुख ही प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।इस प्रकार के सुखों की प्राप्ति करने के लिए नैतिकता के सिद्धन्त को निर्धारित करते हुए मिल ने कहा," दूसरे के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा कि तुम अपने साथ करवाना चाहते हो तथा पड़ोसी के प्रति स्नेह भाव रखना ही उपयोगितावादी नैतिकता का सिद्धन्त है।"

*4.*अन्तःकरण पर विशेष बल -----व्यक्ति केवल सुख प्राप्त करने की दृष्टि से ही कार्य नहीं करता है।व्यक्ति का अन्तःकरण व्यक्तिगत सुख की अपेक्षा सार्वजनिक सुख से अधिक प्रभावित एवं प्रसन्न होता है।इसलिए व्यक्ति हित की अपेक्षा समाज के हित का अधिक महत्व है।व्यक्ति को सुख की प्राप्ति तभी हो सकती है जबकि वह सार्वजनिक सुख का ध्यान रखें।

आगे, धन्यवाद।

*2020-07-30*
*From vivo Note*

*Scanned with CamScanner*